कभी सोचा, आप कितने अच्छे हैं!!

किसी भी व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षण वह होता है जब व्यक्ति अपनी आत्मा के स्वरूप को, अपनी छिपी शक्तियों तथा गुणों को पहचान लेता है। कुछ ही लोग ऐसे भाग्यशाली होते हैं, जो अपनी इन शक्तियों को, आत्मा के इस स्वरूप को पहचान पाते हैं,शेष तो जैसे-तैसे किसी तरह जीवन की गाड़ी खींच रहे होते हैं। इस संसार में यदि कोई सर्वाधिक कठिन कार्य है तो वह है - अपने आपको पहचानना, अपनी भीतरी शक्तियों को पहचानना, अपनी निजी पहचान को पहचानना।

आत्मा के स्वरूप को जानना

यह सत्य है कि मनुष्य आत्म निरीक्षण करता है, तब ही अपने को पहचान पाता है और जब वह अपने को पहचान लेता है तो उसमें निहित दिव्य-शक्ति उजागर हो जाती है। तब उसके वह गुण जागृत हो उठते हैं जो न जाने कब से सोए पड़े थे।

इस सम्बंध में यहाँ 'दादा लेखराज' जो कि ब्रह्माकुमारी संगठन के संस्थापक रहे, का उदारहण देना उचित होगा। उन्होंने अपने अनुभवों में बताया है कि - ''जब मुझे ऐसा लगा कि इस दुनिया में मुझे कोई महत्वपूर्ण कार्य करना है, तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे भीतर ''मैं'' है, जो काफी शक्तिशाली है। बस, उस दिन से यह विद्यालय ही क्या, यह सारी धरती ही मेरे लिए कर्मक्षेत्र बन गई।'' और अजीब बात तो यह कि उन्होंने नारी शक्ति को पहचाना और उन्हें भीतरी शक्तियों से सुसज्जित किया। और आज यह संगठन सारे विश्व में एकता,एक विश्व परिवार की भांति जीने का उद्देश्य सार्थक कर पाया।

यह है अपनी शक्ति को पहचानने का चमत्कार।

स्वयं को पहचानें

आत्म परिचय पाकर ही कोई व्यक्ति अपना आत्मविकास कर सकता है। यह इतना सहज नहीं लगता लेकिन उतना कठिन भी नहीं है।

किसी व्यक्ति को उसकी भीतरी शक्तियों से परिचित कराना अथवा उसे उसके भीतर छिपे विशाल एवं गौरवपूर्ण स्वरूप का ज्ञान

कराना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जब व्यक्ति अपनी वास्तविकता से रूबरू हो जाता है, अर्थात् स्वयं को पहचान लेता है, अपनी भीतरी शक्तियों से परिचित हो जाता है, अपनी आत्मा के स्वरूप को जान लेता है तो उसके भीतर ऐसा परिवर्तन आता है, जिसे देख दुनिया चकित रह जाती है।

प्रो.विलियम जेम्स का कहना है - ``प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक ऐसी अद्भुत शक्ति छिपी होती है, जिसे न कोई देख सकता है और ना ही जिसकी कोई कल्पना कर सकता है। यदि कोई ऐसा साधन निकल आए जिसके द्वारा व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों की तस्वीर खींची जा सके, तो मनुष्य अपनी शक्तियों को देखकर ही चकित रह जाएगा।''

आज आप जो कर रहे , उससे कई गुणा आपमें शक्ति भीतर में है

आज आप जो कुछ कर रहे हैं और जितनी शक्ति से कर रहे हैं उससे करोड़ों गुना अधिक शक्ति आपके भीतर छिपी पड़ी है। तभी तो कहा है कि आज की अपेक्षा वह काम अधिक महत्वपूर्ण है जिसे भविष्य में करने की कामना आप करते हैं, जो आपका जीवनोद्देश्य है, जिसकी ओर आप आकर्षित हैं। ऊँचा उड़ने की इच्छाएं, अपनी आत्मा की शक्तियों की पहचान, अपनी आत्मा के स्वरूप की पहचान, इच्छा शक्ति व एकाग्रता, इन सबको विकसित कीजिए और सच मानिए कि ऐसा कर आप परमात्मा की आज्ञाओं का ही पालन करते हैं।

``कुछ लोगों की शक्तियाँ इतनी गहरी छिपी रहती हैं कि कोई विशेष घटना उन्हें उजागर कर पाती है। जिस प्रकार कुछ पेड़-पौधों के पत्ते मसले जाने पर ही सुगंध प्रदान करते हैं, उसी प्रकार कुछ व्यक्ति संकटकाल में ही कुछ कर पाते हैं और तब वह विजयी सितारे की भांति चमकते दिखाई देते हैं।''

वे कर्म जो पुण्य... -पेज 6 का शेष

तब अर्जुन ने उनसे पूछा, ``प्रभु! मेरी दी मुद्राएं और माणिक भी इस अभागे की दरिद्रता नहीं मिटा सके तो इन दो पैसों से इसका क्या होगा''? यह सुनकर प्रभु बस मुस्करा भर दिए और अर्जुन से उस ब्राह्मण के पीछे जाने को कहा। रास्ते में ब्राह्मण सोचता हुआ जा रहा था कि ``दो पैसों से तो एक व्यक्ति के लिए भी भोजन नहीं आएगा, फिर प्रभु ने मुझे इतना तुच्छ दान क्यों दिया? प्रभु की यह कैसी लीला है''! ऐसा विचार करता हुआ वह चला जा रहा था कि उसकी दृष्टि एक मछुवारे पर पड़ी, उसने देखा कि मछुवारे के जाल में एक मछली फँसी है, और वह छूटने के लिए तड़प रही है। ब्राह्मण को उस मछली पर दया आ गई। उसने सोचा, ``इन दो पैसों से पेट की आग तो बुझेगी नहीं, क्यों न इस मछली के प्राण ही बचा लिए जायें।''

यह सोचकर उसने दो पैसों में उस मछली का सौदा कर लिया और मछली को अपने कमंडल में डाल लिया। कमंडल में जल भरा और मछली को नदी में छोड़ने चल पड़ा। तभी मछली के मुख से कुछ निकला। उस निर्धन ब्राह्मण ने दखा, वह वही माणिक था जो उसने घड़े में छुपाया था। ब्राह्मण प्रसन्नता के मारे चिल्लाने लगा, ``मिल गया, मिल गया''...!!! तभी भाग्यवश वह लुटेरा भी वहां से गुज़र रहा था जिसने ब्राह्मण की मुद्रायें लूटी थी। उसने ब्राह्मण को चिल्लाते हुए सुना ``मिल गया मिल गया'' लुटेरा भयभीत हो गया। उसने सोचा कि ब्राह्मण उसे पहचान गया है और इसीलिए चिल्ला रहा है, अब जाकर राजदरबार में उसकी शिकायत करेगा। इससे डरकर वह ब्राह्मण से रोते हुए क्षमा मांगने लगा और उससे लूटी हुई सारी मुद्रायें भी उसे वापस कर दीं। यह देख अर्जुन प्रभु के आगे नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सके।

अर्जुन बोले, प्रभु यह कैसी लीला है? जो कार्य थैली भर स्वर्ण मुद्राएं और मूल्यवाण माणिक नहीं कर सके वह आपके दो पैसों ने कर दिखाया।

श्री कृष्ण ने कहा, ``अर्जुन! यह अपनी सोच का अंतर है। जब तुमने उस निर्धन को थैली भर स्वर्ण मुद्राएँ और मूल्यवान माणिक दिया तब उसने मात्र अपने सुख के विषय में सोचा। किन्तु जब मैंने उसको दो पैसे दिए, तब उसने दूसरे के दुःख के विषय में सोचा। इसलिए हे अर्जुन! सत्य तो यह है कि जब आप दूसरों के दुःख के विषय में सोचते हैं, जब आप दूसरे का भला कर रहे होते हैं तब आप ईश्वर का कार्य कर रहे होते हैं और तब ईश्वर आपके साथ होते हैं। दूसरों के कल्याणार्थ व ईश्वर की स्मृति में रहकर किया गया हर कार्य पुण्य बनता है। क्योंकि वह कल्याणकारी और सर्व कामनाओं से मुक्त होता है।

ओकलैण्ड। बौद्ध धर्म के मास्टर हंग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भावना।

फरीदाबाद। केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल जी को परमात्म-संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ज्योति व अन्य।

सारंगपुर-म.प्र.। `कानून व न्याय पद्धति में आध्यात्मिकता का समावेश' विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डब्ल्यु.एम.मंसूरी। साथ हैं डॉ.हावडिया, पी.एस.मंडलोई, बेनीप्रसाद सक्सेना, तथा ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी।

सूरतगढ़-राज.। `अखिल भारतीय बेटी बचाओ - सशक्त बनाओ' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में ए.डी.एम. हरविंदर शर्मा, रजनी मोदी, नगरपालिका अध्यक्षा काजल छाबड़ा, ब्र.कु.डॉ. वैशाली, ब्र.कु.सुमन तथा ब्र.कु.रानी।

नालगोंडा-तेलंगाना। एस.पी. विक्रमजीत दुग्गल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.धनलक्ष्मी।

वर्धा-महा.। `सफलता के लिए सकारात्मकता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए प्रो.अर्पणा, ब्र.कु.माधुरी, सचिन देवगिरकर तथा प्रो. स्वप्निल।

पनवेल। महिला बाल विकास समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु.तारा, ब्र.कु. डॉ. शुभदा नील, नगर परिषद की अध्यक्षा चारूशीला घरतजी तथा अन्य।